शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

# स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का साहित्य के अन्तर्गत ग्रामीण जीवन का परीक्षण

कांता शर्मा (शोधार्थी)
क्रिश्चियन कॉलेज
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

## शोध संक्षेप

*जब से मानव ने इस धरती पर जन्म लिया है, वह कहानियाँ पसंद करता आया है। पुराने समय में भित्ति चित्र तथा साहित्य इस बात के साक्षी हैं कि हमारे देश में कहानी कहने की कला भली-भाँति विकसित हो चुकी थी। लोक कथाएँ, धार्मिक कथाएँ, वीरगाथाएँ इत्यादि इस बात के परिचायक हैं कि पहले मनुष्य के सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन में कहानी का कितना ऊँचा स्थान था। न केवल पहले के समय में वरन् आज भी जीवन के प्रत्येक क्षेत्रों में और निवास क्षेत्र में चाहे वह नगरीय परिवेश हो या ग्रामीण परिवेश कहानी की उपस्थिति पायी जाती है। साहित्य, चलचित्र, नभवाणी, दूरदर्शन, नाटक, समाचार पत्र-पत्रिकाओं, पाठ्यक्रमों में सभी जगह कहानी ने अपना महत्वपूर्ण स्थान बना रखा है। कहानी मनोरंजन का सबसे बडा साधन है और इसका प्रयोग कक्षाओं में एक शिक्षण विधि के रूप में भी किया जाता है। इस संदर्भ में प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा दिए गए शब्दों के आधार पर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा ग्रामीण परिवेश पर व स्वरचित मौलिक कहानी का लेखन करवाया गया तथा उसके विश्लेषण द्वारा यह शोध किया गया है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थी कहानी लेखन के माध्यम से ग्रामीण परिवेश की कितनी उचित और सजीव झांकी प्रस्तुत कर सकते हैं।*

## शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गए :

1. स्नातक स्तर के चयनित विद्यार्थियों के समक्ष कहानी का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करना।
2. स्नातक स्तर के चयनित विद्यार्थियों को नमूने के तौर पर दिये गए शब्दों के आधार पर कहानी प्रस्तुत करना।
3. स्नातक स्तर के चयनित विद्यार्थियों को 50 शब्द देकर उनके प्रयोग द्वारा कहानी की (स्वरचित-मौलिक) ग्रामीण परिवेश संदर्भित स्थान करवाना।
4. स्नातक स्तर के चयनित विद्यार्थियों द्वारा दिये गए शब्दों के आधार पर ग्रामीण परिवेश संदर्भित कहानियों की जाँच कहानी के तत्वों के आधार पर करना।
5. स्नातक स्तर के चयनित विद्यार्थियों से कहानी लेखन के विषय व विधि के प्रति प्रतिक्रियाएँ, प्रतिक्रिया मापनी पर प्राप्त करना।

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा निम्न परिकल्पनाएं निर्मित की गयीं :

1. स्नातक स्तर के चयनित विद्यार्थियों द्वारा दिये गए 50 शब्दों के आधार पर ग्रामीण परिवेश संदर्भित कहानियाँ एक समान लिख पायेंगे।
2. स्नातक स्तर के चयनित विद्यार्थियों द्वारा, दिये गए शब्दों के आधार पर कहानी लेखन के विषय एवं विधि संदर्भित प्रतिक्रियाएँ समस्त कथनों पर समान प्राप्त होगी।

शोध विधि :

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा प्रायोगिक एवं विश्लेषणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया।

उपकरण :

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा दिये गए शब्द (50) कहानी लेखन हेतु उपकरण थे तथा एक विकसित प्रतिक्रिया मापनी (कहानी लेखन के विषय एवं विधि संदर्भित) थी।

सांख्यिकीय विधि :

प्रस्तुत शोध हेतु प्रतिशत-विधि का प्रयोग किया गया।

शोध के प्रथम उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी द्वारा उद्देश्य पूर्व नमूना चयन विधि द्वारा साफ्टविजन कालेज, इन्दौर के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का चयन उपलब्धता के आधार पर किया गया। चयनित स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को शोधार्थी द्वारा एक कालांश (45 मिनट) में कहानी का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित रूप से दिया गया :

"कहानी मनोरंजन और ज्ञान प्राप्ति का एक साधन है। भिन्न-भिन्न विद्वानों ने कहानी की परिकल्पना इन शब्दों में दी है :

1. प्राचीन यूनानी दार्शनिक प्लेटो का मत है - "देह के लिये व्यायाम और मस्तिष्क के लिये संगीत ही शिक्षा है। कथा भी संगीत का ही एक भाग है। अतः कहानी भी शिक्षा देने का महत्वपूर्ण साधन है।"

2. चार्ल्स बैटेट ने कहा है - "कहानी एक छोटी-सी वर्णनात्मक गद्य रचना है। इसमें वास्तविक जीवन को कथात्मक रूप में प्रस्तुत करते है।"

3. एडीसन का कथन है - "जब भी शिक्षा देनी हो अथवा उपदेश करना हो तो कहानी द्वारा प्रदान करो।"

4. प्राध्यापक मैथ्यूज के शब्द हैं - "निरन्तर प्रवाहमान घटना ही कहानी है।"

5. हिन्दी कहानी साहित्य के अग्रणी मुंशी प्रेमचंद के विचार व्यक्त किये हैं - "गल्प (कहानी) एक ऐसी गद्य रचना है, जो किसी एक अंश या मनोभाव को प्रदर्शित करती है। कहानी के विभिन्न चरित्र, कहानी की शैली और कथानक, उसी एक मनोभाव को पुष्ट करते हैं। यह रमणीय उद्यान न होकर सुगन्धित फूलों से युक्त एक गमला है।"

6. ऐडगर ऐलन पो ने अपनी परिभाषा में कहा है कि - "छोटी कहानी, एक ऐसी आख्यानिक है- (1)जो इतनी छोटी हो कि एक बैठक में पढ़ी जा सके (2) जो प्रभाव उत्पन्न करने में समर्थ हो (3) जो अपने में पूर्ण हो।"

अच्छी कहानियों की विशेषताएँ :

1. कहानी के उद्देश्य ऐसे होने चाहिये जो पाठकों को चारित्रिक रूप से ऊपर उठाये।

2. आज का जीवन विपत्तियों और दुःखों से परिपूर्ण है, इसलिये जहाँ तक हो सके कहानी का अंत दुःखान्त न होकर सुखान्त होना चाहिए।

3. कहानी की भाषा सरल होनी चाहिए, कठिन शब्दावली होने से बालक कहानी के भाव भली-भाँति ग्रहण न कर सकेंगे।

4. कहानी में पात्रों की भरमार नहीं होनी चाहिए ताकि बालक उनमें उलझकर न रह जाए और कहानी की तह तक पहुँच ही न सके।

5. पाठकों के मानसिक धरातल को ध्यान में रखकर ही कहानी की रचना करनी चाहिए।

6. कहानी के द्वारा बालकों / पाठकों का मनोरंजन होना चाहिए।

7. कहानी में सत् और असत् दो प्रकार के चरित्रों का तथा अन्धकारपूर्ण और उज्जवल दोनों पक्षों का समावेश होना चाहिए ताकि बालकों को अच्छे-बुरे की पहचान हो सके।

कहानी का वर्गीकरण :

1. धार्मिक कहानियाँ 2. ऐतिहासिक कहानियाँ 3. सामाजिक कहानियाँ

इसका श्रेणी विभाजन इस प्रकार है :

1. यथार्थवादी कहानियाँ
2. आदर्शवादी कहानियाँ
3. आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानियाँ
4. घटना प्रधान कहानियाँ
5. चरित्र प्रधान कहानियाँ
6. संख्यात्मक कहानियाँ

अंत के आधार पर कहानी के विभाजनः-

1. सुखान्त, 2. दुखान्त, 3. अंतहीन, 4. अस्पष्ट, 5. विचाराधीन

कहानी के तत्व :

1. शीर्षक : रोचक तथा आकर्षक होना चाहिए। शीर्षक इतना स्पष्ट हो कि इसे पढ़ते ही कथा की झलक मिल जानी चाहिए।

2. कथानक : कथानक में ये गुण होने चाहिए : (1) संक्षिप्तना (2) सरलता (3) स्पष्टता (4) क्रमबद्धता (5) गतिशीलता (6) रोचकता (7) श्रृंखलाबद्धता (8) जीवन से संबंधित (10) सुखान्त

3. पात्र और चरित्र-चित्रण : पात्रों की संख्या कम हो, रोचक हो, मर्मस्पर्शी हो और पात्रानुकूलन हो।

4. शैली : शैली कहानी लेखक का 'स्व' आत्मा है। भिन्न-भिन्न लेखकों की शैली में अंतर होगा। कथानक की दृष्टि से शैली निम्न प्रकार की हो सकती है :

(1) कथोपकथन या संवाद शैली (2) विवरणात्मक शैली - कहानीकार तटस्थ रूप में वर्णन करता है। (3) डायरी शैली, (4) आत्मकथात्मक शैली (5) मनोविश्लेषणात्मक शैली (6) पग शैली (7) शब्द चित्र शैली (8) संस्मरणात्मक शैली

5. भाषा : सरल स्वाभाविक और देशकाल पात्रों के अनुरूप होनी चाहिए, व्यर्थ पांडित्य प्रदर्शन न हो।

6. देशकाल या वातावरण :

प्रत्येक कहानी अपने युग और स्थान का प्रतिनिधित्व करने वाली हों। घटनाएँ जब देशकाल के मुताबिक होती है तभी वास्तविक और उपयुक्त लगती है।

विद्यार्थियों को दिए गए 50 शब्दों को प्रयोग में लाना ग्रामीण परिवेश के देशकाल या वातावरण से जुड़ी कहानी लिखना है जो स्वरचित हो, मौलिक हो। उसमें उपर्युक्त वर्णित कथातत्वों का समावेश हो।

7. उद्देश्य : कहानियों के निम्न उद्देश्य होते हैं :

1. मनोरंजन और आनंद प्राप्ति
2. चितवृत्तियों का परिस्कार
3. शिक्षा और उपदेश
4. जीवन की समस्याओं और रहस्यों का उद्घाटन हो
5. सौन्दर्य
6. रसानुभूति
7. मानव प्रकृति का विश्लेषण
8. जीवन का संतुलित विकास
9. समाज की आलोचना
10.समस्या समाधान

शोध के दूसरे उद्देश्य की पूर्ति हेतु नमूने के तौर पर स्नातक स्तर के चयनित विद्यार्थियों के समक्ष शोधार्थी द्वारा विद्यार्थियों से पूछकर 20 शब्द लिखें और उन पर शोधार्थी द्वारा ग्रामीण परिवेश संदर्भित कहानी रचकर प्रस्तुत की गई। तत्पश्चात शोधार्थी द्वारा स्नातक स्तर के चयनित उन विद्यार्थियों को 50 शब्द (मिले-जुले ग्रामीण व नगरीय परिवेश संदर्भित) दिये गये तथा 1 घंटे का समय दिया गया और उन्हें

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ़्रीड रिसर्च जर्नल

ग्रामीण परिवेश से जुड़ी कहानी लेखन हेतु निर्देश दिये गए।

निर्देश निम्नानुसार थे :

1. दिये गए 50 शब्दों को (श्यामपट या लिखे गए) आधार मानकर उन्हें उपयोग में लाना आपको एक 150-250 शब्दों की कहानी लिखना है।

2. कहानी स्वरचित और मौलिक हो।

3. समय सीमा 1 घंटा है।

4. आपस में बातें नहीं करेंगे, कुछ पूछना हो तो शिक्षिका (शोधार्थी) की मदद लेंगे।

कहानी लेखन हेतु कागज, पेन इत्यादि शोधार्थी द्वारा प्रदत्त किये गये।

1 घंटे पश्चात शोधार्थी द्वारा चयनित स्नातक स्तर के 30 विद्यार्थियों से कहानी एकत्र कर ली गई, तत्पश्चात उन्हें शोधार्थी द्वारा विकसित एक प्रतिक्रिया मापनी (10 कथनों) प्रदत्त की गई, इस प्रतिक्रिया मापनी पर उन्हें अपने विचार / प्रतिक्रिया व्यक्त करना थे।

1/2 घंटे बाद प्रतिक्रिया मापनी प्रपत्र एकत्रित कर लिया गया। 15 मिनट के अंतराल के बाद इच्छुक विद्यार्थियों ने अपनी कहानी का वाचन किया तथा बाकी विद्यार्थियों ने कहानी को श्रवण किया।

परिणाम :

स्नातक स्तर के चयनित विद्यार्थियों द्वारा दिये गए शब्दों के आधार पर ग्रामीण परिवेश संदर्भित 30 कहानियों की विश्लेषणात्मक विधि से कहानी के तत्वों के आधार पर विश्लेषण किया गया जिससे परिणाम प्राप्त हुए वे निम्ननुसार हैं :

कथातत्वों के आधार पर कहानियों का विश्लेषण

| **शीर्षक** | **कथानक** | **पात्र/ चलचित्र** | **शैली** | **भाषा** | **देशकाल** | **अंत** | **उद्देश्य** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स्पष्ट10 कहानियाँ | संक्षिप्त 5 कहानियाँ | अनुकूल 10 कहानियाँ¡ | विवरणात्मक 8 कहानियाँ | सरल 14 कहानियाँ | ग्रामीण परिवेश 12 कहानियाँ | सुखान्त14 कहानियाँ | उपयुक्त 15 कहानियाँ |
| रोचक 5 कहानियाँ | उपयुक्त 13 कहानियाँ | प्रभावशाली 5 कहानियाँ | कथात्मक 4 कहानियाँ | कठिन 3 कहानियाँ | ग्रामीण नगरीय परिवेश 10 कहानियाँ | दुखान्त 5 कहानियाँ | सामान्य 5 कहानियाँ |
| शीर्षक नहीं 3 कहानियाँ | विस्तार 6 कहानियाँ | अस्पष्ट 3 कहानियाँ | आत्मकथात्मक 2 कहानियाँ | सुंदर अलंकृत 2 कहानियाँ | अस्पष्ट 5 कहानियाँ | अधुरी 3 कहानियाँ | उद्देश्यहीन 10 कहानियाँ |
| सामान्य 12 कहानियाँ | सामान्य 6 कहानियाँ | सामान्य12 कहानियाँ | संस्मरणात्मक 6 कहानियाँ | अस्पष्ट 4 कहानियाँ | सामान्य 3 कहानियाँ | मिश्रित 8 कहानियाँ | |
| | | | मनोविश्लेषणात्मक 4 कहानियाँ | सामान्य 7 कहानियाँ | | | |
| | | | अस्पष्ट 6 कहानियाँ | | | | |

E ISSN 2320 – 0871
17 मई 2016

यहाँ यह स्पष्ट किया जा रहा है कि चयनित विद्यार्थियों में से 20 विद्यार्थियों ने अर्थात 40% विद्यार्थियों ने ही दिये गए 50 शब्दों का पूर्ण उपयोग किया।

प्राप्त परिणामों के आधार पर परिकल्पना क्रमांक 1 कि स्नातक स्तर के चयनित विद्यार्थियों द्वारा दिये गए शब्दों (50 शब्दों) के आधार पर ग्रामीण परिवेश से संदर्भित कहानियाँ समान पायी गयी, निरस्त की जाती हैं, क्योंकि विश्लेषण द्वारा प्राप्त परिणामों के आधार पर कहानियाँ भिन्न-भिन्न थीं।

शोधार्थी द्वारा जो प्रतिक्रिया मापनी विकसित की गई थी उसके द्वारा स्नातक स्तर के चयनित विद्यार्थियों (30) से इन दिये गए शब्दों के आधार पर ग्रामीण परिवेश से जुड़ी कहानी लेखन के विषय और विधि संदर्भित प्रतिक्रियाएँ प्राप्त की गई उनका परिणाम निम्नलिखित तालिका में प्रदर्शित है :

स्नातक स्तर के चयनित विद्यार्थियों द्वारा प्रतिक्रियाएँ

| **क्र** | **कथन** | **हाँ** | **नहीं** | **कह नहीं सकते** |
|---|---|---|---|---|
| 1 | कहानी का संक्षिप्त परिचय से आपकों कहानी लेखन में सहायता प्राप्त हुई | 70 % | 25 % | 5 % |
| 2 | शिक्षिका द्वारा दिये गए शब्दों के आधार पर प्रस्तुत कहानी के नमूने से आपको दिशा निर्देशन प्राप्त हुआ | 85 % | 12 % | 3 % |
| 3 | दिये गए शब्दों (50) से आप भली- भाँति परिचित थे | 60 % | 30 % | 10 % |
| 4 | कई शब्दों के अर्थ आपको शिक्षिका से पूछने पड़े | 5 % | 95 % | 0 % |
| 5 | दिए गए शब्दों के आधार पर कहानी लिखना सरल रहा | 55 % | 20 % | 25 % |
| 6 | कहानी लेखन की यह विधि उपयुक्त नहीं लगी | 10 % | 85 % | 5 % |
| 7 | ग्रामीण परिवेश की विशेष जानकारी न होने से कहानी लिखने में कठिनाई आई | 7 % | 73 % | 20 % |
| 8 | मुझे गाँव पसन्द है इसलिये कहानी | 90 % | 6 % | 4 % |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | लिखने में आनंद आया | | | |
| 9 | पहले की पढ़ी गाँव की कहानियों से मुझे लिखने में सहायता प्राप्त हुई | 95 % | 3 % | 2 % |
| 10 | दिए गए शब्दों के आधार पर कहानी लेखन से आत्मविश्वास जागृत हुआ | 99 % | 0 | 1 % |

प्रतिक्रिया मापनी द्वारा प्राप्त प्रतिक्रियाओं के प्रतिशत विधि द्वारा विश्लेषण से शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना क्रमांक 2 की स्नातक स्तर के चयनित विद्यार्थियों द्वारा प्रतिक्रिया मापनी द्वारा प्राप्त प्रतिक्रियाएँ 10 कथनों पर समान पायी गयीं, निरस्त की जाती है क्योंकि प्रतिक्रियाएँ सभी कथनों पर समान प्राप्त नहीं हुई हैं।

## निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के प्राप्त परिणामों द्वारा यह निष्कर्ष प्रदान किया जाता है कि विद्यार्थियों को ग्रामीण परिवेश से जुड़ी कहानियों का पठन-पाठन ही ग्रामीण परिवेश को जीवित रखने व उनका विकास करने हेतु पर्याप्त नहीं है, हमें उनकी रूचि ग्रामीण परिवेश की ओर विकसित करनी होगी। यदि हम विद्यार्थियों को इस प्रकार कहानी लिखना सिखायेंगे तो यह साहित्य, देय एवं ग्रामीण परिवेश के प्रति कर्तव्यों का उचित निर्वाह होगा। इस प्रकार विद्यार्थी कहानी, ग्रामीण परिवेश और साहित्य से जुड़ सकेंगे तथा अपना योगदान साहित्य के रूप में दे जायेंगे।

## संदर्भ ग्रंथ

*1 भाई योगेन्द्र जीत - हिन्दी भाषा शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा*